आस्त्री प्रथम खण्ड, चन्द्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र
'निर्मला' उपन्यास
लेखक- मुंशी प्रेमचन्द

महत्वपूर्ण अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या-

" पर यह कौन जानता था कि यह सारी लीला विधि के हाथों रची जा रही है। जीवन रंगशाला का वह निर्दय सूत्रधार किसी अगम्य गुप्त स्थान पर बैठा हुआ अपनी जटिल क्रूरक्रीड़ा दिखा रहा है। यह कौन जानता था कि नकल असल होने जा रही है, अभिनय सत्य का रूप ग्रहण करने वाला है।

सन्दर्भ- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'निर्मला' उपन्यास से ली गई है। इसके लेखक हिन्दी साहित्य के महान उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द जी है। इन पंक्तियों में उपन्यासकार ने जगत्-नियन्ता ईश्वर की गति का चित्रण करते हुए कहा है कि उसकी लीला को कोई नहीं जानता। बाबू उदयभानु अपने मरने का नाटक करने के लिए घर से निकले थे, परन्तु विधि की लीला ने उनके अभिनय को सच्चा कर दिया।

व्याख्या- निर्मला के पिता बाबू उदयभानु लाल ने यह ~~निश्चय~~ निश्चय किया कि वे अपने कुर्ते में परिचय कार्ड रखकर उसे गंगा किनारे रख देंगे और मिर्जापुर चले जायेंगे, इससे समझा जायेगा कि उनकी गंगा में डूबकर मृत्यु हो गयी। इससे कल्याणी को अच्छा सबक मिल जायेगा। वे छड़ी उठाकर अँधेरी रात्रि में चल पड़े, परन्तु यह कोई नहीं जानता था कि सारी लीला के सूत्रधार विधाता ही हैं। यह विधि ही सृष्टि का नियन्ता और सूत्रधार है। वह किसी अगम्य और गुप्त स्थान पर बैठा ~~है~~ हुआ है। यह जटिल एवं निर्दयतापूर्ण लीला उसकी क्रीड़ा मात्र है। यह किसी को पता नहीं था कि बाबू उदयभानु लाल जो मरने का अभिनय करने चले थे, वह सत्य होने जा रहा है। वे स्वयं नहीं जानते थे कि उनका यह अभिनय सत्य का रूप धारण कर लेगा और मतई के लाठी से ~~मार~~ प्रहार करने पर उनकी जीवन लीला समाप्त हो जायेगी।

विशेष- मुंशी प्रेमचन्द आस्थावादी आस्तिक उपन्यासकार थे। यहाँ उन्होंने जगत् नियन्ता को सृष्टि का वास्तविक-

शेष आगे-

सूत्राधार माना है। संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास ने भी अपने महाकाव्य 'रामचरित मानस' में लिखा है कि ईश्वर के इच्छा बिना वृक्ष का एक पत्ता भी नहीं डोलता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०कृ०सं० महावि० खुटसेला, पूर्णियाँ
२८।०८।२०

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र
'निबंधमाला' गद्य खण्ड
शीर्षक - अनेकता में एकता : भारतीय साहित्य में
लेखक - महाकवि जानकी बल्लभ शास्त्री

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न:- भारतीय भावना का मूल स्वर क्या है?

उत्तर:- महाकवि जानकी बल्लभ शास्त्री ने अपने प्रसिद्ध निबंध अनेकता में एकता: भारतीय साहित्य में भारतीय भावना का विस्तार से वर्णन किया है। उन्होंने कहा है कि "एकोऽहं बहुस्याम" एक से अनेक हो जाऊँ अथवा "अविभक्तं विभक्तेषु" विभक्तों में भी अविभक्त रहूँ यही भारतीय भावना का मूल स्वर है, जो हमारी अनेकता में एकता को प्रतिबिंबित करता है।

हमारी यह एकता कोई आकस्मिक घटना नहीं है। हमारी साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परम्परा में ही इस चेतना को देखा जा सकता है। महाकवि शास्त्री जी उपनिषद् का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि आग तो एक ही है किन्तु वह धरती पर विभिन्न रूपों में प्रकट होती है।

प्रश्न:- निबंधकार शास्त्री जी को किस बात का दुःख है?

उत्तर:- उच्च कोटि के समीक्षक महाकवि जानकी बल्लभ शास्त्री जी को इस बात का दुःख है कि कुछ स्वार्थी तत्व अपने घृणित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए राजनीति को हथकण्डा बनाकर हमारी एकता के मधुवन को उजाड़ना चाहते हैं। वे हमारी सदियों से चली आ रही परम्परा को, राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को अपने लोभ में तोड़ देना चाहते हैं। ऐसे ही लोगों के कार्यों से शास्त्री जी को दुःख हुआ है।

प्रश्न:- शास्त्री जी देशवासियों को किस प्रकार आह्वान करते हैं?

उत्तर:- महाकवि जानकी बल्लभ शास्त्री बड़ी भावुकता के साथ समस्त देशवासियों से आह्वान करते हुए कहते हैं कि - "हे देशवासी आओ अग्रपंथी, उग्रपंथी, प्राचीन, नवीन सब आओ। आओ धनी, मनी, सर्वहारा, मजदूर, श्रमिक, बेकार सब इकट्ठे आओ। नीड़ को गढ़ना है, धीरज वाले, शिल्पी

Date ______ Page ______

आओ। राजनीतिक दलबन्दी तो थोथी होती है। चोरों की टट्टी है वह। वस्तुतः एकता स्वाधीनता और शान्ति एक ही अर्थ के भिन्न-भिन्न शब्द हैं।"

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
ख०कु०सं० महावि० कुरसेला, पूर्णियाँ
24/08/20

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०- पत्र

दिगंत - भाग - 2 गद्य खण्ड

शीर्षक - उसने कहा था

लेखक - चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

महत्वपूर्ण अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या -

" निमोनिया से मरने वाले को मुरब्बे नहीं मिला करते।"

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक दिगंत-भाग-II के 'उसने कहा था' पाठ से ली गई हैं। इसके लेखक हिन्दी साहित्य के यशस्वी कहानीकार चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जी हैं। यह प्रसंग उस समय का है जब खन्दक में खूब सर्दी पड़ रही है। उसी समय वजीरा सिंह लहना सिंह से कहता है, अच्छा, अब बोधा सिंह कैसा है? अच्छा है। यह कथन बोधा के प्रति लहना सिंह लहना सिंह के व्यवहार को प्रकट करता है। उसी प्रेमपूर्ण समर्पण पर वजीरा सिंह लहना सिंह को अपना ख्याल रखने का संकेत भी करता है और बोधा सिंह के प्रति व्यवहार और त्याग का भी।

व्याख्या - उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से वजीरा सिंह के इस कथन से लहना सिंह के त्याग, प्रेमपूर्ण समर्पण का परिचय मिलता है। खुद लहना सिंह बोधा सिंह के पहरों की जगह रात भर पहरा करता है, वह खुद सूखी लकड़ी पर सो जाता है। इसके त्याग को देखकर लहना सिंह को वजीरा सिंह सलाह देता है कि कहीं तुम्हारी भी तबियत खराब न हो जाय। जाड़ा से यदि तुम्हारी भी तबियत खराब हो जायेगी तो तुम क्या उसकी रक्षा कर पाओगे। तुम्हें मरने के लिए अपनी जमीन भी नसीब नहीं होगी। यहाँ मुरब्बा अरबी शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ है 'वर्गाकार चौकोर जगह। यहाँ दूसरा अर्थ यह है कि जिस व्यक्ति को निमोनिया हो जाता है उसे कड़वी औषधि दी जाती है, मुरब्बे नहीं।

इन पंक्तियों में कहानीकार ने एक सैनिक की महत्ता, उसकी असहायता, मातृभूमि से दूर दूसरे के जमीन पर लड़ने वाले भारतीय वीर सैनिकों के मन के भावों को बड़ी कुशलता के साथ रेखांकित किया है। यहाँ देश प्रेम का मार्मिक चित्रण हुआ है।

डॉ० देवचरण प्रसाद 24/04/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० ज० सं० म० लो० पि० कुशवाहा पूर्णिया